International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

बारेला जनजाति के परम्परागत महिला परिधान, अधिवस्त्र, अधोवस्त्र एवं उत्तरीय का विश्लेष्णात्मक अध्ययन

डॉ नीरजा गुप्ता

(सह – प्राध्यापक), मानविकी और उदार कला विभाग, रवींद्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल

परिचय: वेश-भूषा का अर्थ है शरीर पर धारण की गई वह वस्तु जिससे शरीर का रूप परिवर्तित हो जाता है। वेश-भूषा में कपड़े तथा श्रृंगार दोनों आते हैं। श्रृंगार करने का चलन भारत में आदिकाल से चला जा रहा है । पौराणिक एवं वैदिक ग्रंथों में सोलह श्रृंगार का वर्णन मिलता है। उनमें उन पदार्थों के बारे में भी जानकारी मिलती है जिनसे श्रृंगार करने की वस्तुएँ बनाई जाती थीं। पहले यह माना जाता था कि भारत में सिले हुए कपड़ों की शुरूआत सोलहवीं शताब्दी में हुई। लेकिन अब इस बात का पता लगाया जा चुका है "वैदिक युग से सातवीं शताब्दी तक सिले हुए कपड़ों का विवरण तत्कालीन साहित्य में लिखा हुआ है। वैदिक, बौद्ध तथा जैन साहित्य, कोशों तथा आख्यायिकाओं में उस समय पहने जाने वाले वस्त्रों के नाम मिलते हैं। व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने अर्थात् अच्छा दिखने में वेश-भूषा का विशेष महत्व रहता है। हर व्यक्ति अच्छे तथा विशिष्ट कपड़े पहनना चाहता है। प्रत्येक समाज, क्षेत्र तथा जाति की अपनी अलग-अलग वेश-भूषा संबंधी विशेषता होती है। यही विशेषता और विविधता व्यक्ति को उसके समुदाय का प्रतिनिधि बनाती है। जैसे - यदि हम कहीं भी कपड़े के मोटे रस्से जैसी कई घुमावों वाली बड़ी-सी पगड़ी बाँधे और धोती के साथ डोरियों वाला कुर्त्ता पहने किसी आदमी को देखते हैं तो तत्काल समझ जाते हैं कि यह किस वर्ग का व्यक्ति है। वेश-भूषा से सुगमता से पहचाना जा सकता है कि कौन-सा आदिवासी व्यक्ति किस जनजाति का है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वेश-भूषा के द्वारा जनजातीय विशेषताओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है। वेश-भूषा आर्थिक स्थितियों एवं जीवन की दशाओं के बारे में भी बताती है। मध्यप्रदेश के आदिवासियों में वेश-भूषा की कुछ समानताएँ पाई जाती हैं तो पर्याप्त विविधता भी पाई जाती है । वस्त्रों को पहनने का ढंग, वस्त्रों के रंग तथा वस्त्रों के प्रकार की भिन्नता सभी जनजातियों को एक-दूसरे से अलग पहचान देती है ।

बारेला जनजाति का परिचय

"बारेला जनजाति मध्यप्रदेश की एक अनुसूचित जनजाति है। शासन द्वारा बारेला जनजाति को भील जनजाति की संवर्ग जाति माना गया है। मध्यप्रदेश में यह जनजाति खरगोन धार एवं झाबुआ जिले में पायी जाती है । बारेला की अधिकांश जनसंख्या खरगोन में धार जिले के तीन विकास खण्डों तथा झाबुआ जिले में नगण्य है |"

मध्यप्रदेश के विभिन्न आदिवासी जातियों में बारेला भी एक जनजाति है । बारेला भील जनजाति के संवर्ग की है। बारेला जनजाति के संबंध में किसी भी प्रकार का ऐतिहासिक अभिलेख उपलब्ध नहीं है। यह जाति कहां से तथा कब आई इस संबंध में इतिहास मौन है। पौराणिक गाथाओं में भी बारेला का कही उल्लेख नहीं है। इस संबंध में उनकी एवं लोक कथाओं से कुछ संकेत उपलब्ध हुए हैं। जिनके आधार पर कहा जा सकता है कि यह जाति पश्चिमी प्रदेश से आकर धार एवं खरगोन जिला में प्रस्थापित हुए है।

वर्तमान: अधिवस्त्र, अधोवस्त्र, उत्तरीय

"वेशभूषा का अर्थ है शरीर पर धारण की गई वह वस्तु जिससे शरीर का रूप परिवर्तित हो जाता है वेश-भूषा में वस्त्र तथा श्रृंगार दोनों आते है श्रृंगार करने का चलन भारत में आदिकाल से चला आ रहा है पौराणिक एवं वैदिक ग्रन्थों में सोलह श्रृंगार का वर्णन मिलता है उनमें उन पदार्थो के बारे में भी जानकारी मिलती है जिनसे श्रृंगार करने की वस्तुयें बनाई जाती थी। पहले यह माना जाता था कि भारत में सिले हुये कपड़े की शुरूआत सोलहवीं शताब्दी में हुई थी लेकिन अब इस बात का पता लगाया जा चुका है वैदिक युग से सातवीं शताब्दी तक सिले हुए कपड़ों का विवरण तत्कालीन साहित्य में लिखा हुआ है "" | वैदिक, बौद्ध तथा जैन साहित्य कोशों तथा आख्यिकाओं में उस समय पहने जाने वाले बस्त्रों के नाम मिलते है।

व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने अर्थात् अच्छा दिखने में वेषभूषा का विशेष महत्व रहता है हर व्यक्ति अच्छे तथा विशिष्ट कपड़े पहनना चाहता है प्रत्येक समाज क्षेत्र तथा जाति की अपनी अलग- अलग वेश भूषा संबंधी विशेषता होती है यही विशेषता और विविधता व्यक्ति को उसके समुदाय का प्रतिनिधि बनाती है । जैसे यदि हम कहीं भी कपड़े के मोटे रस्से जैसी कई घुमाव वाली बड़ी सी पगड़ी बांधे और धोती के साथ डोरियों वाला कुर्ता पहने किसी आदमी को देखते है तो तत्काल समझ जाते है कि यह किस वर्ग का व्यक्ति है । वेशभूषा से सुगमता से पहचाना जा सकता है कि कौन सा आदिवासी व्यक्ति किस जनजाति का है दूसरे शब्दों में कहा जाये तो वेशभूषा के द्वारा जनजातीय विशेषताओं का भी अनुमान लगाया जा सकता है "वेशभूषा आर्थिक स्थितियाँ एवं जीवन की दशाओं के बारे में भी बताती है । '

बारेला जनजाति के साज श्रृंगार की वर्तमान स्थिती

बारेला जनजाति के सदस्यों से साक्षात्कार एवं अवलोकन के आधार पर जो तथ्य वेशभूषा एवं आभूषण के संदर्भ में सामने आये उनका उल्लेख यहाँ पर कर रहे है।

पुरूष वर्ग के परिधान - बारेला जनजाति के पुरूष वर्ग अधोवस्त्र के रूप में (शरीर के निचले हिस्से) एक ऊनी शाल लपेटते है यह ऊनी शाल गहरे रंग का मोटा सा कपड़ा होता है जिसमें एक छोर उल्टी तरफ से कमर के पास खोसते हुये पीछे से ले जाते हुये आगे की तरफ से लाते हुए वापिस उल्टी तरफ भी खोस देते है । शाल के अन्दर अंत: वस्त्र के रूप के रूप में चण्डी पहनते है जिसको कुष्ठा कहते है अधिवस्त्र (शरीर के ऊपरी भाग में) के रूप में कमीज पहनते है कमीज कॉलर वाली पूरी वाह की होती है कमीज के नीचे अन्दर अंत: वस्त्र के रूप में बनियान पहनते है जिसे बनिया कहते है। अतिरिक्त परिधान के रूप में सिर में पगड़ी पहनते है जिसको फेंटा कहते है यह 12 मीटर लम्बा सफेद या पीले रंग का कपड़ा होता है माथे में एक गुदने की विन्दी गुदवाते है तथा दोनों कान छिदे हुये रहते है कभी-कभी एक कान भी छिदा होता है कई बार शाल के स्थान पर धोती पहनते है जो सफेद रंग की होती है इसके साथ कमीज के उपर बाएं कंधे पर तौलिया डालते है तथा सिर में गांधी या नेहरू टोपी पहनते है नये परिवेश में आने के कारण आजकल जो पुरूष वर्ग गांव से बाहर काम करने को जाते है वो शहरी क्षेत्र की वेशभूषा धारण करते है वो पेन्ट शर्ट भी पहनते है तथा काम से लौटकर आने के बाद वापस अपनी पारंपरिक परिधान शा कमीज फेटा धारण कर लेते है ।

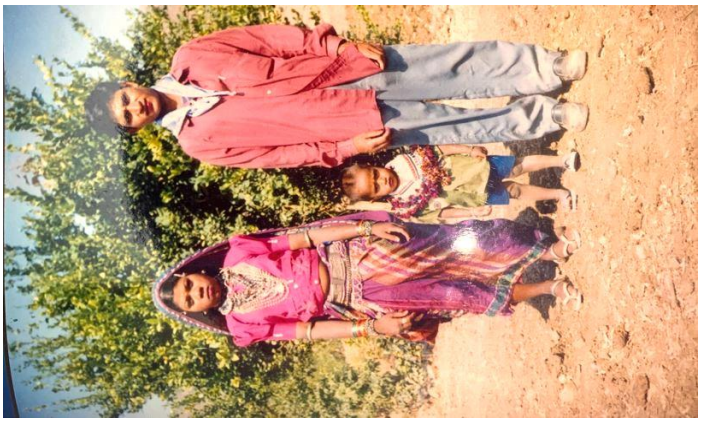

चित्र क्रमांक 1

महिला वर्ग के परिधान

बारेला जनजाति की महिलायें लहंगा, डगला तथा उन्नी धारण करती है महिला परिधान को तीन भागों में बांट सकते है अधिवस्त्र, अधोवस्त्र उत्तरीय । जिसका उल्लेख में किया गया है। सर्वप्रथम अधोवस्त्र के बारे में जानगें ।

चित्र क्रमांक 2

अधोवस्त्र - बारेला महिलायें अधोवस्त्र के रूप में कमर से नीचे लहंगा धारण करती है इनका लहंगा दो प्रकार का होता है पहला जो बड़ा होता है वो लहंगा कहलाता है जो कि 15-16 मीटर लम्बा होता है जिसकों घाघरा कहते है तथा छोटे को लंहगा कहते है जो कि चार से पाँच मीटर लम्बा होता है। घाघरा को मोकड़िया भी कहते है । घाघरा की लम्बाई घुटने से नीचे होती है।

कपड़ा, रंग, प्रिन्ट - लहंगे में बड़ी-बड़ी फूल पत्तियों की डिजाइन होती है फूल पत्तियां की बड़ी-बड़ी प्रिन्ट का लहंगा होता है यह टेरीकाट और सूती दोनों कपड़ों का होता है लहंगा गहरे कलर का होता है अधिकतर लाल, पीले, नारंगी, हरा, पीला, बैंगनी रंग का होता है।

सिलाई - लहंगा देखने में बहुत ही सुन्दर लगता है लहंगा किनारे से सिला हुआ नहीं होता है पूरे 15-16 मीटर कपड़े को फैलाया जाता है फैलाकर ऊपर की ओर इसमें चुन्नट डाली जाती है ये चुन्नट कमर के हिसाब से डाली जाती है सुई धागे में पूरे कपड़े को इकट्ठा किया जाता है फिर एक नेफा तैयार किया जाता है इस नेफे में डाली गई कपड़े की चुन्नटों को सिल दिया जाता है यह काम महिलायें अपने हाथों से घर पर ही करती है तथा कभी-कभी बाहर से भी करवाती है कपड़े में कच्चे-कच्चे टाकें सुई धागा से डाले जाते है तथा बाद में इसी धागे के सहारे से कपड़े को इकट्ठा किया जाता है फिर इकट्ठे किये हुये कपड़े को पीछे की तरफ से कपड़े के नेफों को सिला जाता है फिर पलटकर सामने से तुरफन के द्वारा बंद कर देते है दोनों ओर से कमर पर बांधने के लिए लम्बी 2 नेफे की पट्टी छोड़ीजाती है इसमें बाद नीचे से भी

दो पट्टियों को दोनों किनारों को सिला जाता है नीचे से लहंगे में पलटकर सिलाई कर देते या फिर जिस कलर का लंहगा होता है उनकी आधा इंच चौंड़ी पट्टी भी नीचे अन्दर से पलटकर सिल ली जाती है जैसे लंहगा का लाल रंग का है उस पर प्रिन्ट या फूल नीले और हरे रंग के है तो उस पर नीले रंग के कपड़े की पट्टी लगा दी जाती है ।

लंहगा पहनने की विधि - लंहगा इस तरह से पहना जाता है जो बाद में धोती के समान दिखाई देता है। सर्वप्रथम सिला हुआ लहंगा उठाकर पीछे कमर से होकर लाता हुआ सामने दोनों किनारे के नेफे की पट्टी से बांध देते है अब नीचे के दोनों छोरों पैरों के बीच में से निकलकर पीछे कमरे के पास ले जाकर ऊपर के नेफे के सहारे बांधते देते है। जिससे पूरे लहंगे की चुन्नट पीछे की तरफ होती है सामने से धोती के समान दिखाई देता है लहंगा दो पैरो में बंट जाता है और जब बारेला महिलाएं काम पर जाती है उस समय वे सामने के दोनों साईड के पैरो का सामने से थोड़ा थोड़ा भाग उठाकर सामने खोंस लेती है ।

लंहगे के कार्य - इस तरह के लंहगे का महत्वपूर्ण कार्य होता है। लहंगे में पूरी चुन्नट पीछे की तरफ होती है जिससे पीछे वाला भाग उभरा हुआ दिखाई देता है जिससे जब महिलायें इस लहंगे को पहनकर चलती है तब उनका घाघरा भी पीछे से जम्प करता है जिससे जम्पिंग सेंस विकसित होता है दूर से देखने पर ये लहंगा नृत्य का लहंगा जैसा दिखाई देता है। जब इस लहंगे को पहनकर बारेला महिलाएं खेतों में काम करती है तो पीछे से फूला हुआ होने के कारण लहंगा गद्दी का काम करता है जिससे जमीन में पड़े ककंड पत्थर उनको गड़ते नहीं है इनका लहंगा पुरूषों का आकर्षण का केन्द्र भी है क्योंकि जब ये लहंगा पहनकर चलती है तो लहंगा पीछे से हिप वाले भाग पर फूला हुआ होता है और जब वो चलती है तो उनके चलने के साथ लहंगा भी हिलता है जिससे दूसरो का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है ।

शादी विवाह के अवसर पर ये अपने लहंगे में जरी की लेस चारो तरफ लगा लेती है जिससे उसकी सुन्दरता में चार चाँद लग जाते है।

अधिवस्त्र - अधिवस्त्र के रूप में बारेला महिलायें लहंगे के उमर ब्लाऊज या चोली धारण करती है जिसे डगला कहते है । डगले की लम्बाई कमर तक होती है डगला सामने से खुलने वाला होता है इसमें गले से लेकर नीचे तक बटन लगे होते है। डगला रंग बिरंगा होता है ये मुख्यतः हरा, पीला, लाल, नीले रंगा का होता है। ये रंगबिरंगी लेसों से भी सजा होता है। जिसके कारण वह बहुत ही सुन्दर लगता है।

इसमें छोटी पफ आस्तीन होती है कमर के पास नीचे दोनों साईड पॉकेट लगे होते है तथा गले के पास कॉलर न लगाकर कॉलर जैसा प्रभाव उत्पन्न किया जाता है उसी के ऊपर स्थाई सिलाई करके कॉलर लगाई जाती है इस प्रकार की कॉलर को अतिरिक्त कॉलर कहते है कॉलर और पॉकेट दोनों को लेस के द्वारा सजाया जाता है। डगला कमर के पास से फिटिंग का होता है तथा उसके बाद थोड़ी सी लूस फिंटिंग का होता है। डगला लहंगा की मैचिंग से भी पहना जाता है। जैसे लहंगा हरा लाल, पीला है तो डा हरा रंग का होगा। कई बार दो पॉकेट चेस्ट के पास भी लगे होते है तथा साईड में भी पॉकेट होते है ।

डगले की सिलाई – डगला की सिलाई साधारण होती है सामने से खुलने वाला होता है जिसमें एक साईड बटन लगे होते है और दूसरी साईड काज बने होते है । आस्तीन छोटी चुन्नट वाली होती है। जिसके ऊपर व नीचे दोनों तरफ चुन्नट होती है आस्तीन में चारों तरफ लेस लगी होती है - गले को कालर के द्वारा सजाया जाता है लम्बी पतली तिकोनी कालर अलग से लगाई जाती है। कॉलर अलग से न लगकर कपड़े के साथ ही जुड़ी हुई होती है। कलर में भी चारों

तरफ लैस लगी होती है पॉकेट साधारण पेंच पॉकेट होते है पॉकेट आस्तीन, बटन पट्टी सभी में विपरीत रंग की पाइपिंग लगी होती है। जैसे हरे रंग का डगला होगा तो लाल या गुलाबी रंग की पाइपिंग लगी होगी ।

डग का रंग और कपड़ा - डगला के रंग सभी ब्राईट कलर के होते है अधिकतर घाघरे की मैचिंग से होते है लाल, हरा, नीला, गुलाबी रंग का होता है डगले का कपड़ा सूती या टेरीकाट का होता है ।

डगले के कार्य - डगले की लम्बाई कमर तक होती है जिससे काम करने बैठने में सुविधा होती है। छोटी आस्तीन होने के कारण काम करते समय हाथों को भी दिक्कत नहीं होती है पॉकेट होने से वो अपने पैसे तम्बाखू, बीड़ी वगैहरह रख सकती है सामने से खुला होने के कारण पहनने उतारने में सुविधाजनक होता है।

अंतः वस्त्र - डगले के नीचे सिंम्पल बिना आस्तीन की बनियान पहनती है जिसको बनिया कहते है बनिया पहनने से डगला को सहारा मिलता है । बनिया भी रंग बिरंगी सूती या टेरीकाट की होती है।

उत्तरीय - उत्तरीय के रूप में बारेला महिलाएं चुन्नी का प्रयोग करती है इस चुन्नी को उन्नी कहते है उन्नी पाँच हाथ लम्बी होती है उन्नी को सिर पर से डालकर साईड से लम्बा लटकता हुआ छोड़ा जाता है उन्नी सूती बायल के कपड़े की होती है इसके चारों तरफ कपड़े की पट्टी लगा दी जाती है या कई बार इसको लेस से भी सजाया जाता है लहंगे से मिलती जुलती उन्नी होती है। सिर पर उन्नी पर्दा की दृष्टि से और आदर की दृष्टि से भी डाली जाती है ।

लड़कियो के परिधान - लड़किया अधिवस्त्र के रूप में छोटी चोली पहनती है चोली के अन्दर अंत: वस्त्र के रूप में ब्रा पहनती है जिसे बॉडी कहते है तथा अधोवस्त्र के रूप में घाघरा धारण करती है इनका घाघरा किनारे से सिला हुआ होता है इसका घेर कम होता है जो चार से पाँच मीटर लंबा होता है सिर में 5 हाथ लम्बी उन्नी (चुन्नी) धारण करती है जिसको सिर पर डालकर कमर पर साईड में खोंस दिया जाता है इस प्रकार घांघरा, डगला, उन्नी ये तीनो मिलकर बारेला परिधान को आकर्षण प्रदान करते है ।

आजकल गाँव छोड़कर जो लोग शहरों में आते जा रहे है वो गांव ही वेशभूषा को छोड़कर शहरी वेशभूषा धारण करते जा रहे है महिलायें लंहगा पेटीकोट (झालर वाल) लंहगा पेटीकोट पहनती है पेटीकोट के साथ सीधे पल्ले की साड़ी पहनती है। परिधान में सामाजिक वातवरण के हिसाब से परिवर्तन हो जा रहा है ।

संदर्भ:

- "संधान" वर्ष 1 अंक 2 सितम्बर 2004 आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान, मध्यप्रदेश का मुखपत्र ।
- वर्मा डॉ. एम. एल. एवं रावत एस. "बारेला जीवन शैली" आदिम जाति अनुसंधान संस्थान, मध्यप्रदेश भोपाल, अप्रैल 1988 ।
- द्विवेदी हजारी प्रसाद: "प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद" राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।
- शास्त्री श्री निवास: "मृच्छकटिकम् " साहित्य भण्डार सुभाष बाजार, मेरठ 1972
- Hendley Holbein Thomas: "Indian Jewellery " Cultural Publishing House Delhi. सिंह डॉ "आदिवा
- Russell & Hira Lal "Tribes and castes of the central Provinces of India" Anthropological publications.